चेतना का सागर : अनुरागसागर

प्राक्–कथन

सन्त कबीर साहब कृत बीजक ग्रन्थ से सभी परिचित हैं। बीजक के अतिरिक्त कबीर साहब के अन्य ग्रन्थ भी हैं जैसे ज्ञानसागर, अम्बुसागर, बोधसागर एवं अनुरागसागर आदि। हिन्दी के विद्वान् जैसे श्रीपरशुरामचतुर्वेदी आदि ने इसीलिये कबीर के 'आदिसाहित्य' की सम्भावना की है। डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर साहब के लिए कहा है "उनकी नित्य स्फीयमान काया का लेखा–जोखा भी दुष्कर है पर इतना निश्चित है कि बीजक के बाहर भी कबीरदास जी की कुछ वाणियाँ जरूर रहीं होंगी।

अनुराग सागर ग्रन्थ में सन्त कबीर साहब ने चौथे लोक–सतलोक एवं उसकी चेतना जिससे यह सृष्टि रूपवती हुई, का अत्यन्त सरल एवं रोचक वर्णन किया है। चतुर्विध सृष्टि में चेतना किस प्रकृति में किस मात्रा अथवा किस रूप में विद्यमान रहती है, यह भी इसमें उल्लिखित है। प्राचीन काल में भारतवर्ष जम्बूद्वीप में था जहाँ विविध अवतार हुए। अनुराग सागर में जम्बूद्वीप को परमात्मा का द्वीप कहा गया है। सृष्टिपूर्व में परम पुरुष सुन्न समाधि में लीन थे। सर्वप्रथम जब परमशक्ति में यह इच्छा हुई कि सृष्टि की रचना की जाय तब उस परमशक्ति से एक शब्द प्रकट हुआ जिससे समस्त लोकों की रचना हुई। आदिचेतन शक्ति के दो रूप हैं – गुप्त और प्रकट। सृष्ट्यारम्भ में वह पुरुष पुहुप के मध्य सूक्ष्म रूप में विद्यमान थे। शब्द से ही पुहुपद्वीप एवं अन्य अट्ठासी द्वीपों तथा षोडश पुत्रों का जन्म हुआ। पुहुपद्वीप में पुरुष ने चार कली वाले सिंहासन पर बैठकर जैसे ही अपनी कला धारण की, चारों ओर सुगन्ध फैल गई। ब्रह्माण्ड की समस्त सुगन्धों का मूल स्रोत यही है।

अट्ठासी द्वीप और सोलह सुत पैदा हुए पर्याप्त समय व्यतीत हो गया। इन सोलह सुतों में एक सुत कालनिरंजन या कालपुरुष अथवा धर्मराज भी था। काल–निरंजन ने परम पुरुष की प्रगाढ़ भक्ति कर वरदान स्वरूप तीन लोकों का राज्य प्राप्त कर लिया और अपने काल–जाल में जीवात्माओं को फँसाकर भ्रमित एवं दुःखी करने लगा। सत्तपुरुष को जीवों पर दया आई अतः उन्होंने अपने षोडश पुत्रों में ज्ञानी जी (कबीर साहब) को जीव उपकारार्थ धरा पर भेजा।

निज चेतना चारों युगों – सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में क्रमशः सत्सुकृत, मुनीन्द्र, करुणामय तथा कबीर के रूप में धरा पर अवतरित हुई। जब कबीर साहब सत्तपुरुष की आज्ञानुसार निजदेश से प्रस्थान कर रहे थे तब मार्ग में उन्हें धर्मराज मिला और उनसे झगड़ा करने लगा और अपने भयंकर रूप से ज्ञानी जी को भयभीत करने लगा तब योगजीत (ज्ञानी जी) ने कहा कि वह परम पुरुष के तेज से यहाँ आये हैं। उसी समय उन्होंने पुरुष का ध्यान करके अपने शब्द अंग से उस काल को निढ़ाल कर दिया। निःशक्त काल ज्ञानी (योगजीत) के चरणों में पड़ गया।

ज्ञानी जी ने यह भी कहा कि संसार में शब्द चेतना अर्थात परम शक्ति का शब्द स्वरूप ही सर्वोपरि है। काल के फन्दे सत शब्दोच्चारण अथवा सतशब्द चेतना से ध्वस्त हो जायेंगे।

सतशब्द के सुमिरन तथा नाम–दान हेतु कबीर साहब चौका–आरती कराते थे। चारों युगों में उन्होंने बहुत अधिक जीवों का उद्धार नहीं किया क्योंकि उन्होंने धर्मराज को बचन दिया था। काल ने अपना प्रपंच रचकर उनसे यह बात स्वीकार करा ली थी कि वे सतयुग, त्रेता और द्वापर में अल्प जीवों को सतलोक तक ले जायें और कलियुग में चाहे जितने जीवों को ले जायें।

अनुराग सागर में सत्तलोक का भव्य, दिव्य एवं विस्मयकारी वर्णन है। सद्गुरु के निर्देशन में केवल सत्तनाम के स्मरण एवं ध्यान (सहजमार्ग) के अभ्यास से ही सत्तलोक अथवा सत्तपुरुष से तारतम्य स्थापित किया जा सकता है। निगुरा कभी भी इस प्रयास में सफल नहीं हो सकता। सतगुरु की कृपा से अनुरागी शिष्य ही इस आत्मलाभ को प्राप्त कर सकता है।

इस अनुराग–सागर ग्रन्थ की अनेक टीकाओं का कथन कबीर पंथियों में किया जाता है फिर भी कुछ विद्वान् इसको सन्त तुलसी साहब की रचना मानते हैं। मैंने अपनी इस शोध पुस्तक में स्वामी युगलानन्द बिहारी जी की टीका जो लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित है, को आधार बनाया है। अनुराग सागर की यह टीका आज प्रायः अनुपलब्ध ही है अतः मैंने अपनी इस शोध पुस्तक **चेतना का सागरः अनुरागसागर** में स्थल–स्थल पर उद्धरण देने का प्रयास किया है जिससे विषय के स्पष्टीकरण के साथ पाठक की रुचि बनी रहे। बीजक की भाँति अनुराग सागर में भी

संस्कृत, हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाओं एवं बोलियों तथा उर्दू आदि के शब्द आ गये हैं। यही नहीं इन्होंने अपने इस ग्रन्थ में 'बीजक' कृति का भी नाम लिया है।

इस शोध पुस्तक को सरल–भाषा में लिखने का प्रयास किया गया है जिससे सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी इसको पढ़कर आत्मलाभ एवं आत्मपद प्राप्त कर सके। मुझे इस शोध पुस्तक को लिखने में हाथरस समाध के महन्त श्री गुरुसरन दास मिश्रा जी ने पर्याप्त सहयोग किया। वस्तुतः पूर्ण अनुराग सागर ग्रन्थ उन्हीं से प्राप्त हुआ। मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ। इस शोध पुस्तक का मुख पृष्ठ डी.ई.आई. ड्राइंग–पेण्टिंग विभाग (कला संकाय) की डा. नमिता त्यागी द्वारा बनाया गया है।

मैं, कुलमालिक राधास्वामी दयाल के चरण कमलों में इस लघु प्रयास की दीन प्रस्तुति हेतु अपने तुच्छ एवं सीमित ज्ञान जन्य त्रुटियों के लिए क्षमा याचना करती हूँ।

विनयावनता
अगम कुलश्रेष्ठ